सामाजिक-पौराणिक

सामाजिक नाटकों की केन्द्रीय समस्या नारी है, जो मुख्यतः सुधारवादी दृष्टिकोण से परिचालित है। इस तरह के नाटकों में बालविवाह, पर्दाप्रथा का विरोध तथा विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा आदि का समर्थन किया गया है। बालकृष्ण भट्ट के 'जैसा काम वैसा परिणाम,' राधाकृष्णदास के 'दुःखिनी बाला' आदि नाटक ऐसे ही हैं। भट्टजी के नाटक में दृष्टिकोण की प्रौढ़ता तथा व्यंग्य का तीखापन मिलता है जो उनके व्यक्तित्व के अनुरूप है। राधाकृष्णदास ने विधवा के स्वाभाविक शरीर धर्म को प्रस्तुत करते हुए दुःखिनी वाला लिखा था। पहले इसका नाम 'विधवा विवाह' नाटक था जिसकी श्यामा भ्रूणहत्या करती है, पर 'दुःखिनी बाला' में सरला विषपान द्वारा आत्महत्या कर लेती है। वस्तुतः विधवा-विवाह में यथार्थवादी दृष्टिकोण दिखाई पड़ता है जो समाज विरोधी होने के कारण बाद में दूसरी पुस्तक में बदल जाता है। अभी समाज इस तरह के नग्न यथार्थ को सहन नहीं कर सकता था, इसलिए उसे एक आदर्श की ओर मोड़ना पड़ा। बाद में चलकर समझौते की यही प्रवृत्ति प्रेमचन्द में आदर्शोन्मुखी यथार्थ के रूप में प्रकट हुई। लाला जवाहर लाल वैद्य का 'कमल मोहिनी भँवर सिंह' नाटक परनारी-गमन के विरोध में लिखा गया। गोपालराम गहमरी के 'विद्या विनोद' में ओझाई, अनमेल विवाह, बहु विवाह का विरोध तथा पातिव्रत्य का समर्थन किया गया है। नारी समस्या के भारतदुर्दशा के मेल में भारतोद्धार, भारत आरत, भारत सौभाग्य, देश-रक्षा आदि नाटक लिखे गए।